The Luminary

हिन्दी भाग

संपादक
डॉ. रुपिन्द्र शर्मा

विद्यार्थी संपादक
साक्षी गोयल

CONTENTS

S. No.	Article	Writer	Page
1.	संपादकीय	डॉ. रुपिन्द्र शर्मा	84
2.	विद्यार्थी सम्पादिका की कलम से	साक्षी गोयल	84
3.	ऊलझन शब्दों की	करन सुखवाल	85
4.	एक हजारो में मेरी बहना	करन सुखवाल	85
5.	जिन्दगी	हरविंद्र सिंह	86
5.	न होते	जसप्रीत कौर	86
6.	बचपन	जसप्रीत कौर	86
7.	कुछ विचार	जसप्रीत कौर	86
8.	इक दौर नया	जसप्रीत कौर	87
9.	अपने दिल की सरज़मी	हर्ष 'ताहिर फतेहबादी'	87
10.	जिन्दगी के हाथों	हर्ष 'ताहिर फतेहबादी'	87
9.	मुझे डर है	हर्ष 'ताहिर फतेहबादी'	87
11.	नए सिरे से	हर्ष 'ताहिर फतेहबादी'	87
10.	सामाजिक व्यवस्था और लिंग भेद : समस्या और समाधान	चाहत चौहान	88
11.	वर्तमान समय में पंजाब में बढ़ रहा नशों का रुझान	करन सुखवाल	89
12.	गजल	जगसीर	89
13.	गज़ल	जगसीर	89
14.	जिन्दगी क्या है	साक्षी गोयल	89
15.	तो बात बने	साक्षी गोयल	90
16.	कविता क्या है	साक्षी गोयल	90
17.	सफर ज़िंदगी का	ऋषभ कुमार	90
18.	इंसानियन नहीं है फिर भी इंसान हूँ	रोहित कुमार	90

संपादकीय

मनुष्य की अनेकानेक आकांक्षाओं में से उसकी एक सहज आकांक्षा है– स्वयं को अभिव्यक्त करने की तीव्र इच्छा। यहाँ स्वयं को अभिव्यक्त करने से हमारा तात्पर्य है–स्वयं के भावों, विचारों और सोच की अभिव्यक्ति से है। साहित्य इसी आत्माभिव्यक्ति का एक साधन है। साहित्यकार की आत्माभिव्यक्ति की सफलता इस बात में निहित होती है कि वह किस सीमा तक पाठकों को अपने साथ संसक्त कर पाई है। उसके भाव, विचार, सोच और अनुभति जब सहृदय के भावों को उद्वेलित करने में सफल हो जाते हैं, तभी रचना में साधारणीकरण की स्थिति उत्पन्न होती है। इसी वजह से भारतीय रस सिद्धांत के मर्मज्ञ व्याख्याता डॉ. नगेन्द्र की मान्यता है कि वस्तुतः साधारणीकरण होता ही रचनाकार की स्वयं की अनुभूति का है।

भारतीय आचार्यों ने साधारणीकरण को साहित्य की कसौटी माना है। साधारणीकरण का सरल अर्थ है– पाठक, दर्शक अथवा श्रोता का रचनाकार की अनुभूति से सहज जुड़ाव। सहृदय का यह जुड़ाव सहज ही होता, क्योंकि मानव मात्र में स्थायी भाव सुप्तावस्था में विद्यमान होते हैं। जब किसी भाव का कोई विषय इस रूप में लाया जाता है कि वह सबके उसी भाव का आवलम्बन बन जाता है तो उसमें रसोद्बोधन की क्षमता आ जाती है। दूसरे शब्दों में पाठक का रचना के साथ जुड़ाव तभी हो पाता है जब रचनाकार की अभिव्यक्ति में अनुभूति की सच्चाई होती है। वस्तुतः रचनाकार एक विशेष समयावधि में अपनी कृति का प्रणयन करता है। जिस समयावधि में रचनाकार अपनी अभिव्यक्ति कर रहा होता है ; उस समय की कुछ आवश्यकताएं, मांगें, संकल्प और खतरे होते हैं। रचनाकार के इन्हीं खतरों की ओर संकेत करते हुए कभी मुक्तिबोध ने लिखा था–

'' अब अभिव्यकित के सारे खतरे
उठाने ही होंगे।
तोड़ने होंगे ही मठ ओर गढ़ सब।''

वर्तमान समय रचनाकारों के सम्मुख अनेकानेक चुनौतियों का समय है। राजनीतिक व्यवस्था से मोहभंग, भ्रष्टाचार, किसानों की दुर्दशा, स्त्रियों के प्रति बढ़ रहा अपराधीकरण हमारे समय की ऐसी समस्याएँ हैं जिन पर कलम चलाते और स्वयं को अभिव्यक्ति करते हुए अनेक खतरों को अनायम ही आमंत्रित किया जा सकता है। मगर हिंदी साहित्य का इतिहास इस बात का साक्षी है कि कबीर, गुरु नानक, निराला और मुक्तिबोध जैसे अनेक रचनाकार ऐसे हुए जिन्होंने अपने समय और समाज की कुरीतियों का न केवल खण्डन किया बल्कि उनके विरुध जनमत भी तैयार किया। कबीर ने पूरे आत्मविश्वास से अपने समय के जड़ शास्त्रज्ञों पर व्यंग्य करते हुए अपनी 'आँखों देखी' के सच को बयान किया। उन्होंने कहा था–

"तेरा मेरा मनुवां कैसे एक होइ रे।
मैं कहता हूँ आँखन देखी, तू कहता कागद की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राख्यो अरुझाई रे।।"

शास्त्रज्ञ होना बुरी बात नहीं है। मगर शास्त्र को पकड़कर समस्याओं को हल करने की बजाय उनको उलझाकर रखने की वृत्ति को सकारात्मक नहीं माना जा सकता। वस्तुतः ऐसी मनोवृति को ही हजारी प्रसाद द्विवेदी 'जब्दी मनोवृत्ति' मानते हैं। इस स्थिति में व्यक्ति की मौलिकता का हनन हो जाता है और 'जाने हुए' का बोझ 'पंडिताई के बोझ' के परिवर्तित हो जाता है। एक सहज और मौलिक रचनाकार वही हो सकता है जो शास्त्रज्ञ होकर भी 'पंडिताई का बोझ' नहीं ढोता बल्कि अपने समय और समाज की तत्कालीन आवश्यकताओं के अनुरूप ही अपने रचनाकर्म में प्रवृत्त होता है। रचनाकार की इस ईमानदारी से ही उसकी रचनाएं अनुभूतियों के चाक पर पककर सामने आती हैं।

परंतु यहाँ ध्यातव्य है कि रचना के विषय पक्ष के प्रति अत्यधिक सजगता बहुधा उसके कलापक्ष की अवहेलना करने वाली सिद्ध होती है। जैसा कि हम शुरुआत में संकेत कर चुके हैं कि साहित्य की कसौटी साधारणीकरण की स्थिति है। अकेले अनुभव मात्र से यह स्थिति घटित नहीं हो सकती। जब अनुभव कला का आश्रय ग्रहण करता है, तभी उसमें रसोद्बोधन की शक्ति होती है और इसी बिंदू पर साहित्यिक रचना अपनी विशिष्टता और विलक्षणता सिद्ध कर पाने में समक्ष होती है।

उपर्युक्त चर्चा के आधार पर कहा जा सकता है कि साहित्य लेखन के लिए कलाकार को मानवीय संवेदनाओं का पुंज होना अनिवार्य है। उसे जीवन में गहरी पैठ करनी चाहिए ताकि अनुभव के मोतियों को इकट्ठा कर सके। उसके भीतर अपने अनुभवों को अभिव्यक्त करने का साहस होना अनिवार्य है। इसके साथ ही उसे कला के मानदण्डों को भी अपनाना चाहिए जिससे की साधारणीकरण की अनेकानेक स्थितियों का उसके साहित्य में आविर्भाव हो सके।

नवोदित रचनाकारों से हमारा कहना यही है कि वे स्वयं को अभिव्यक्त करने के लिए अत्यधिक शीघ्रता का परिचय न दें। उन्हें अपने भावों और विचारों को प्रस्तुत करने वाली भाषा की बारीकियों को समझने और उस पर पुरी पकड़ बनाने की अत्यधिक आवश्यकता है। उनको अपने रचनात्मक व्यक्तित्व का सूक्ष्मता से अन्वेषण करना चाहिए। कला की कसौटियों को समझने का प्रयास जारी रखना चाहिए। हम उनके प्रथम रचनात्मक कदमों का स्वागत करते हैं। मगर यह कतई नहीं चाहते कि उनके प्रथम कदम, प्रथम चरण पर ही रुक जाएँ। क्योंकि इन कदमों को अभी शिखरों की यात्रा करनी है, हिमालय की उतुंग चोटियों को सर करना है, कल्पना की नयी उड़ानों को यथार्थ की भूमि पर खड़े रहकर पूरा करना है। इन्हीं आशाओं के साथ हर वर्ष की भांति बच्चों को उनके अपने प्रथम मंच, प्रथम कदम, प्रथम अभिव्यकित के स्रोत 'द लिमूनरि' के प्रकाशन की अनेकशः बधाइयाँ।

डॉ. रुपिन्द्र शर्मा
हिंदी विभाग

विद्यार्थी सम्पादिका की कलम से

चरित्र व्यक्ति के दर्पण की भांति होता है, जैसे दर्पण देखने मात्र से अपनी सुन्दरता का आभास हम लगा सकते हैं वैसे ही अपने चरित्र से हम अपनी छवि समाज रूपी दर्पण में सुन्दर से सुन्दरतम् बना सकते हैं। चरित्रहीन व्यक्ति का घर, समाज और देश सभी स्थानों पर तिरस्कार होता है और चरित्रवान व्यक्ति घर, समाज और देश सभी स्थानों पर प्रशंसा का पात्र बनता है। मनुष्य के चरित्र और व्यक्तित्व की पहचान उसकी बोली और व्यवहार से हो जाती

है। जो व्यक्ति जितना चरित्रवान होगा, उसकी वाणी उतनी ही मीठी और व्यवहार उतना ही शालीन होगा। चरित्र की यह महानता ही व्यक्ति को महान् बनाती हैं। हमारा चरित्र हमारी वाणी और व्यवहार से स्पष्ट झलकता है, इसलिए आवश्यक यह है कि हम चरित्रवान बनें। जिस व्यक्ति की कथनी और करनी में अन्तर होता है, उसका समाज में व्यवहार उत्तम नहीं होता जिससे वह चरित्रवान व्यक्ति का रूप नहीं ले पाता।

अंग्रेजी में एक कहावत है कि यदि धन चला जाए तो समझो कि तुमने अवश्य कुछ खोया है, किन्तु यदि चरित्र बिगड़ जाए तो समझो तुमने 'सब कुछ' खो दिया। इसलिए सुन्दर चरित्र निर्माण के लिए सदा प्रयत्नशील रहना चाहिए। चरित्र उन गुणों का समूह है, जिसका सीधा सम्बन्ध हमारे व्यवहार से होता है। प्रतिदिन हम बहुत लोगों से मिलते हैं, किन्तु सबको मित्र नहीं बना लेते क्योंकि हमें उनके व्यवहार और चरित्र का पता नहीं होता। जिस प्रकार समाज, व्यवहार और वातावरण मनुष्य के चरित्र को प्रभावित करते हैं उसी तरह मनुष्य का चरित्र भी समाज और वातावरण को प्रभावित करता है। जो व्यक्ति जैसी संगत करता है या जैसे माहौल में रहता है, वह वैसा व्यवहार और आचरण करेगा। मनुष्य तो क्या पशु–पक्षी भी बुरी संगत में पड़कर बुरे चरित्र वाले बन जाते हैं। इसलिए अच्छे चरित्र वाला बनने के लिए आवश्यक है कि जहां आप रहते है वहां का वातावरण भी अच्छा हो।

इस वर्ष के 'दि लूमिनरी' मैगज़ीन के सम्पादिका का कार्य मेरे लिए साहित्य के सृजनात्मक संसार में प्रवेश का द्वितीय कदम है। जिसका निर्वाह करते हुए मुझे अत्यधिक खुशी का अनुभव हुआ है। हमारी यह मैगज़ीन विद्यार्थियों की सृजनात्मक प्रतिभा को निखारने का एक खूबसूरत मंच है। मुझे आशा है कि हमारे नवोदित विद्यार्थी, रचनाकार के रूप में स्वयं को तलाशने के लिए इस मंच से अवश्य लाभान्वित होंगे।

साक्षी गोयल
बी.ए (भाग तीसरा)

ऊलझन शब्दों की

मैं फंसा बैठा हूँ, पहेलियों में,
शब्दों की ऊलझनो में।
लिखूँ तो क्या लिखूँ ?
शुरूँ करूँ तो कहाँ से ?

चंद सवाल और मेरे ख्याल।
ऊलझ चुँके हैं, दुनिया के शब्दों में।

अब निकलूँ तो निकलूँ कैसे ?
पर निकलूँ क्यों ?
फंसना ही तो था मुझे
शब्दों की ऊलझनो में ।

ख्याल था कलम चलाने का।
विचारों को जगाने का।
शब्दों को जमीं पर उतारने का।
पर अब न ख्याल हैं न विचार
ऊलझे हुएँ हैं, शब्दों के जाल।
सोच रहा हूँ, जाल का नाश
पर उलझ चुकी है शब्दों की आस।

दिख जाएँ रोशनदान तो निकल बैठूँ
इन शब्दों के जाल से।
पर यह सोच के डरा हूँ
कि मैं कायर न कहला जाऊँ।।

तो अब ? अब तो वही जो दुनिया में सही
पर दुनिया तो है ही अनजान।
ये क्या जाने ऊलझे शब्दों के बाण
इन्हें तो बैठे–बैठे वाह ! वाह !
करना होता है।।

मैं फिर बैठा हूँ, उदास–निराश
कोशिश की मैंने ऊलझन–सुलझाने की।
दूर कर मिटाने की, पर न दूर हुई
ये उलझन शब्दों की, ये ऊलझंन शब्दों की।

करन सुखवाल
बी.एस.सी.(भाग दूसरा)

एक हजारो में मेरी बहना

एक हजारो में मेरी बहना
अब उसके बारे में क्या कहना
है चंचल और बड़ी शरारती
भोली सुरत पर नखरे मारती
अब उसके बारे में क्या कहना
एक हजारों मेरी बहना।।

बचपन की वो मीठी यादें।
याद आती अब पुरानी बातें
एक टी.वी के लिए, जब होता दंगल
तो कौन सुल्तान और कौन पहलवान
लेकिन रिमोंट होता हमेशा कुरबान
अब उसके बारे में क्या कहना
एक हजारों में मेरी बहना

मैंने ठगा–ठगा सा महसूस किया
जब दो रुपये की राखी के बदले
दो हजार का नोट मांग लिया।
हदें तो तब पार हुईं, जब नोट लौटा
बहना ने फिर से, भाई का प्यार मांग लिया।
अब उसके बारे में क्या कहना
एक हजारों में मेरी बहना

मम्मी की वो फेवरेट डिश

बेलन, पराठें और चांटे की रिस्क
खुब बटर लगाकर, खाये थे हमने
ये हम दोनों के सिवाय, कोई और न जाने
अब उसके बारे में क्या कहना
एक हजारों में मेरी बहना
हुए बड़े और बने समझदार
न गया ये, बचपन का प्यार
अब उसके बारे में क्या कहना
एक हजारों में मेरी बहना

करन सुखवाल
बी.एस.सी.(भाग दूसरा)

जिन्दगी

खामोश हूँ पता नहीं कैसे
नाच रहा हूँ ज़िंदगी नचा रही है जैसे ....
लेकिन जिस दिन मैंने ठान लिया ...
फिर देखूँगा ज़िंदगी मेरा कुछ बिगाड़ती है कैसे !

लूट लूँ दुनिया को, अभी इतनी मेरी औकात नहीं
अभी तक मुझे दुनिया से मिली कोई सौगात नहीं...
देखना एक दिन मैं लौटूँगा सौगात बनकर...
तू यह मत समझना कि मुझ में कोई बात नहीं !

वो कुछ इस कदर आये मेरी ज़िन्दगी में मानो
खुशियों की बाढ़ आ गई ...
उनके आने से तो मेरी ज़िंदगी ही रौशना गई
बंजर ज़मीन जैसी थी यह ज़िंदगी...
दोस्तों के आने से उसमें भी मॉनसून आ गई...

मैं मुसाफिर बन जाता अगर तू मंज़िल होती...
बन जाता मैं चांदनी रात अगर तू इश्क मिजाज होती...
वैसे तो मुझे डर लगता है तेज हवाओं से...
लेकिन मैं पंछी बन जाता अगर तू खुला
आसमान होती...

रुका हुआ हूँ , हारा नहीं हूँ
हौसले से खड़ा हूँ , डरा नहीं हूँ
तू जितने चाहे ज़ख्म देले मुझको ऐ ! ज़िंदगी
मैं अभी ज़िदा हूँ , मरा हुआ नहीं हूँ।

हरविंद्र सिंह
बी.कॉम. (भाग दूसरा)

न होते

जमाने में अगर गम न होते,
मोहब्बत को मिले सहारे न होते
कभी सुख की साँस मुझे मिल जाती शायद,
अगर इश्क की बाजी हारे न होते
अगर हमदर्द दुनिया में मिलता न कोई,
तो फिर आशकों के गुजारे न होते
खतरनाक रास्तों पर अगर मैं न चलती,
नज़रों के सामने यह नज़ारे न होते।
मेरा दिल यह कुर्बान जाता कैसे,
अगर उन्होंने गुस्से दिखाये न होते।
शरीकों ने मुझे दिये होते न धक्के,
प्रीत ने यह विचार विचारे न होते।

जसप्रीत कौर
बी.ए.(भाग पहला)

बचपन

भोला सा वो बचपन, वो चढ़ती जवानियाँ
कल तक था जो सच, आज बनी कहानियाँ।
मिट्टी के चुल्हों को पाँव से गिराना
लुका–छुपी खेलना और रूठना मनाना
याद है आज भी वो नन्ही शैतानियाँ,
कल तक था जो सच आज बनी कहानियाँ,
भोला सा वो बचपन, वो चढ़ती जवानियाँ,
सखियों के संग वो गुड़ियों से खेलना।
प्यार से ही सब के गुस्से को झेलना,
सताती है आज भी वो यादें पुरानियाँ।
कल तक था जो सच आज बनी कहानियाँ,
भोला सा वो बचपन, वो चढ़ती जवानियाँ।
अम्मी की लोरियों वो अब्बू का डर,
जाने कब छुट गया बाबुल का घर।
कहाँ खो गई वो प्यारी निशानियाँ
वो भोला सा बचपन वो चढ़ती जवानियाँ।
कल था जो सच आज बनी हैं कहानियाँ

जसप्रीत कौर
बी.ए.(भाग पहला)

कुछ विचार

1 **सूरजमुखी का फूल** – मैं हमेशा सूर्य की तरफ उन्मुख रहता हूँ। जिस–जिस दिशा में सूर्य जाता है, मैं भी उस–उस दिशा की ओर अपना मुख करता चला जाता हूँ। इसलिए ही मैं हमेशा खिला रहता हूँ।
शिक्षा–हमेशा अपना रुख ईश्वर की ओर रखना। हर परिस्थिति में आप आनन्दित रहना सीख लेंगे।

2. **ताड़ का वृक्ष**– मेरी वृद्ध पत्तियों को मुझसे अलग मत करना। ये मुझे मेरी ऊँचाइयों तक पहुँचने के लिए पोषक तत्त्व प्रदान करती हैं।
शिक्षा– हमारे माता–पिता और वृद्धजनों का अनुभव हमारे जीवन की उन्नति के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। बड़ों के संरक्षण और संस्कारों की धरोहर के बिना हम प्रगति नहीं कर सकते। अतः उन्हें अपने से कभी दूर न करें।

3. **सेब** : मुझ छोटे से सेब को बनाने के लिए अनेकों पत्तियों की ऊर्जा चाहिए।
शिक्षा – समाज में अच्छाई लाने के लिए अनेक लोगों के योगदान की आवश्यकता है। इसलिए आइये और इस महायज्ञ में अपना योगदान दीजिए।

4. **चन्दन का वृक्ष**– मैं अपनी सुगन्ध से अपने साथ के वृक्षों को भी सुंगधित कर देता हूँ।

शिक्षा– अपने गुणों को, अपनी प्रतिभाओं को अपने तक सीमित मत रखना।

5. कानून हमें गैर कानूनी आचरण से रोकता है।
6. हमें कानून का आदर करना चाहिए ।
7. अच्छी पुस्तक एक महान आत्मा का अमूल्य जीवन खत है।
8. महान् पुरुषों की संगति निश्चय ही फल देती हैं।
9. पुस्तकें सदा ही मनुष्य का ज्ञान बढ़ाती हैं।
10. मौसम हमारे जीवन में ताजगी, स्फूर्ति व नई उमंग भर देता है।
11. महान् पुरुषों की जीवनियों से हमें सदैव आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती है।
12. नियमित व्यायाम करने से शरीर स्वस्थ होता है।
13. विद्या मनुष्य का तीसरा नेत्र है।
14. हमें सब लोगों को एक सामान देखना चाहिए।
15. सच्ची लगन और मेहनत हमेशा रंग लाती है।
16. हमें अपने देश के लिए हर कुर्बानी देनी चाहिए।
17. विज्ञापन का प्रयोग हमें अच्छे कामों के लिए करना चाहिए।
18. मनुष्य को अपना काम कल पर नहीं टालना चाहिए।

जसप्रीत कौर
बी.ए.(भाग पहला)

इक दौर नया

इक दौर नया दुनिया में शुरू हम सबके कदम से होगा।
बलवान हो जिससे देश अपना वह काम ही हम से होगा।
यह राम और श्रीकृष्ण की धरती, धरती बुद्ध महान की
युग–युग से इस मिट्टी ने अगवाई की इन्सान की।
यह देश है अर्जुन, भीम का राणाप्रताप से वीर का,
कुछ करके दिखाएँगे हम भी, कुछ अपने भी दम से होगा।

जसप्रीत कौर
बी.ए.(भाग पहला)

अपने दिल की सरज़मीं

अपने दिल की सरज़मीं पे बसा ले मुझको,
इस से पहले कि खुदा बुला ले मुझको।
ज़िंदगी के सारे मौसम रुख्सत क्या हुए,
बिन सोचे समझे किया तेरे हवाले मुझको।
बादल होंगे बरसात होगी पर तू न होगी,
पल दो पल तो गले से लगा ले मुझको।
तेरे जल्वों को ताकने की कोशिश की मैंने,
आए अह्ल–ऐ–वफा जो बाहों में संभाले मुझको।
नीली गुलमोहर के गुलिस्तां का पता तो बता,
चैन से तो न जीने देंगे दुनिया वाले मुझको।
मैंने जब भी इन गज़लों की आंखों में देखा,
आइना दिखाता रहा मेरी किस्मत के छाले मुझको।
तिरे मिलने पर कयामत का डर है मुझे,
तेरी कातिल नज़रें कहीं मार न डालें मुझको।

हर्ष 'ताहिर फतेहाबादी'
बी.एस.सी. बाइयो टैक(भाग तीसरा)

ज़िंदगी के हाथों

ज़िंदगी के हाथों खंजर देख रहा हूँ,
तबाही से पहले का मंज़र देख रहा हूँ।
महफिल में जिन जिन की आंखें नम हैं,
इस समंदर से जुदा अंबर देख रहा हूँ।
कितने महदूद थे नज़ारे अपनी दुनिया के,
आज अपनी खुशियों का झुका सर देख रहा हूँ।
परवाज़ में जो फना हो गए थे परिंदे,
आज भी परिंदों की डगर देख रहा हूँ।
तितली की उम्र इक बरस की महज़ है,
मैं तन्हा ! तन्हा कई बरसों से शजर देख रहा हूँ।
माना कि दिल को कोई गम तो नहीं है,
मौत और मेरे दरमियां सब्र देख रहा हूँ।
होगा ये कि मेरे नग्में भुला देगा तू 'ताहिर',
धूआं–धूआं कागज़ की कब्र देख रहा हूँ।

हर्ष 'ताहिर फतेहाबादी'
बी.एस.सी. बाइयो टैक(भाग तीसरा)

मुझे डर है

मुझे डर है
कि कोई मेरी तन्हाई छीन लेगा
यह थकन, दर–ब–दर भटकना, आवारापन
अहबाब, तदबीर, आश्नाई और शबाब
मुझे डर है
कि कोई मेरी बेवफाई छीन लेगा
मेरे अश्क, मेरा ख्वाब, तबीअत बेताबी
महताब पुर हौल आफताब
मुझे डर है
कि कोई मेरी परछाई छीन लेगा
कलम, कैंफियत, यादें, हादसे
आहट, राहत, डायरी और नकाब
मुझे डर है
कि कोई मेरी रौशनाई छीन लेगा
मेरे नग्मे, गज़लें, काफिये, वाकिये
अगम से अदम का ताल्लुक बेताब
मुझे डर है
कि कोई मेरी बादशाही छीन लेगा।

हर्ष 'ताहिर फतेहाबादी'
बी.एस.सी. बाइयो टैक(भाग तीसरा)

नए सिरे से

नए सिरे से जल रहा गम यहां यारों,
अजीब मज़ा उसे भूलने में आ रहा यारों।
भटक रही थी कश्ती वो आज डूब गई,
चढ़ा हुआ था दरिया उतर गया यारों।
न मेरी आंखें थीं, न मेरा चेहरा था,
इक नया शख्स कल शीशे में दिखा यारों।
उसके कूचे में नूर परस्ती का आलम होता है,

उसके घर के पास गया दर पर नहीं रुका यारों।
वो कौन था, वो कहां से आया, उसे क्या हुआ,
सुना है कोई शख्स आज मर गया यारों।

हर्ष 'ताहिर फतेहाबादी'
बी.एस.सी. बाइयो टैक(भाग तीसरा)

सामाजिक व्यवस्था और लिंग भेद : समस्या और समाधान

समाज के नियमन तथा नियंत्रण के लिए बनायी गयी व्यवस्था को सामाजिक व्यवस्था कहते हैं। प्राचीन काल से ही सामाजिक क्षेत्र के हर वर्ग में ये परम्परायें महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। इन्हीं परम्पराओं के आधार पर भारतीय समाज में अनेक प्रकार के भेदभाव किये जाते हैं। चाहे वो जातिगत भेदभाव हो या फिर लिंग भेद। इस लेख के माध्यम से हमारे समाज में हो रहे लिंग भेद का हमारे देश एवं सामाज पर जो प्रभाव पड़ता है उसका वर्णन किया गया है। लिंग भेद, वह भेद है जो एक स्त्री और पुरुष में किया जाता है। स्त्री को पुरुष की अपेक्षा कम योग्य समझा जाता है। इन भेदों और अंधविश्वासों ने स्त्री जाति को अधिक प्रभावित किया है। लिंग भेद केवल स्त्री पर ही नहीं बल्कि देश की सामाजिक व्यवस्था पर भी प्रभाव डालता है।

भारत में लिंग असामनता : 21वीं शतांब्दी में अगर भारत में पुत्र उत्पन्न हो जाता है तो जश्न मनाया जाता है और अगर बेटी का जन्म हो जाये तो कोई खुशी नहीं मनाई जाती है। ऐसा क्यो ? क्या बेटिओं का जन्म लेना कोई अपराध है, यह प्रश्न आता है। लड़कियों को जन्म लेने के बाद या पहले ही मार दिया जाता है। अगर पहले नहीं तो बाद में उन पर अत्याचार या हिंसा करके उन्हें मार दिया जाता है। यह असमानता कब खत्म होगी। आखिर कब लड़कियों को समान अधिकार दिये जायेंगे। लड़कों को हर तरह से छूट मिलती है। पर लड़कियों को बन्धनो में रखा जाता है।

''स्त्री की उन्नति एव अवनति, देश की उन्नति एवं अवनति पर निर्भर होती है ''

यह कथन सत्य तब होगा जब समाज में लिंग भेद नहीं किया जायेगा। स्त्री को हर अधिकार समान रूप से मिलेंगे। किसी भी प्रकार का कोई भी भेद–भाव नहीं किया जायेगा। चाहे वो किसी भी रंग, रूप, जाति या धर्म की स्त्री हो। इस प्रकार के भेद–भाव देश के गौरव को प्रभावित करते हैं।

सामाजिक भेदभाव समस्याएँ और समाधान :–

''समानता मानव का अधिकार है, किन्तु कोई भी सरकार ये अधिकार दिलाने में, सफल नहीं हुई है।''

ये बात फ्रांससीसी के प्रसिद्ध उपन्यासकार ओनोरे बॉलजेंक ने कही थी। क्या आप इनकी बात से सहमत है ? यह बात तो सत्य है कि समाज में भेदभाव किया जाता है।

हर सामाजिक वर्ग में यह भेदभाव किसी न किसी रूप में होता ही रहता है तथा अनेक समस्याएँ भी देश की अखण्डता एवं गौरव को प्रभावित करती हैं। जैसे :– कन्या भ्रूण हत्या, बाल विवाह, अंधविश्वास आदि मुख्य रूप से हैं। इन समस्याओं की वजह से कोई भी लड़की अपने पैरों पर खड़ी नहीं हो पर रही है। उनके मन में कुछ करने की लगन धीरे–धीरे खत्म होती चली जा रही है। भ्रूण हत्या एक दण्डनीय अपराध है। पर फिर भी ये हत्याएं नहीं रुक रही हैं।

शिक्षा के स्तर पर लड़कियों में भेदभाव किया जाता है। वे सोचते हैं कि लड़कियों को शिक्षित करना बेकार है क्योंकि कुछ वर्षों बाद उनका विवाह कर दिया जायेगा। परन्तु यह गलत है जितना अधिकार लड़कों को दिया जाता है उतना लड़कियों को भी दिया जाना चाहिये। अशिक्षित होने की वजह औरतें बाहरी दुनिया के बारे में जानकारी नहीं ले पाती तथा हर प्रकार से दुखी रहती हैं, हर वक्त अपने आपको घरेलू काम काजों में व्यस्त रखती हैं। अगर हमें एक विकसित देश या प्रगतिशील देश की स्थापना करनी है तो इस लिंग–भेद को खत्म करना होगा।

लैगिंग असमानता खत्म करने के लिए कानूनी प्रयास :– देश में हो रहे लैगिंग या अन्य कोई भी भेदभाव जो स्त्री से सम्बन्धित हों उनके निवारण के लिये कुछ कानूनी प्रवाधानों का निर्माण किया गया है। पर यह कानूनी प्रावधान कागजी रूप में ही क्यों विद्यमान हैं ? इन प्रवाधानों का प्रबन्धक मुख्य रूप से पुरुष ही होता है जो इस प्रकार के मामलों में अपना हाथ नहीं डालता है जो कि एक गलत रुझान है। पुरुष लोग स्त्री को नागरिकता की द्वितीय श्रेणी में रखते हैं। उनके ऊपर अत्याचार करते हैं। उन्हें नीचा दिखाते हैं। अगर परुषों के मन में से यह विचार निकाल दिया जाये तब ही स्त्री को सम्मान मिलेगा तथा समाज में उसका मान बढ़ेगा। इसीलिए यह हर लड़के– लड़की व स्त्री–पुरुषों के बीच हो रहे भेदभावों को खत्म करने का प्रयास करना होगा ताकि हम एक उज्जवल समाज और देश की कामना कर सकें।

देश के हर क्षेत्र राजनैतिक सामाजिक, धार्मिक एवं आर्थिक में पूर्ण समानता हो चाहे लड़की या लड़का हो उनमें किसी भी रंग रूप जाति–पाति या धर्म, आधारित ऊँचनीच का भाव न हो ! फिल्डस्मर्थ कहते हैं कि :–

'' एक स्त्री ही झाड़ियों को फूल बना सकती है तथा पुरुष के घर को स्वर्ग बना सकती है।''

यह बात सत्य प्रतीत होती है। क्योंकि एक स्त्री ही ऐसा कर सकती है। सरकार ने ''बेटी पढ़ाओ, बेटी बचाओ'' अभियान शुरू किया जो कि 22 जनवरी सन् 2015 में हरियाणा में किया गया है। ये भी एक ऐसा कदम है जो लिंग–भेद की असमानता को खत्म करने की ओर बढ़ रहा है।

लिंग समानता लड़कियों को मिलनी चाहिए। ये अधिकार लड़कियों को मिल जायेगे तो किसी प्रकार की अन्य भेद नहीं होगा। पुरुषों के मन में यह विचार है कि स्त्रियाँ कुछ भी नहीं कर सकती। परन्तु आधुनिक युग में लड़कियाँ लड़को से आगे निकल रही हैं। वे बिना सहारे के अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हैं। पर पुरुष उन्हें समाज में द्वितीय नागरिक की श्रेणी में रखते हैं जो कि गलत है। इसीलिये हमें इस को बदलना होगा। तथा पुरुषों की सोच को गलत साबित करना होगा। इसके लिए हमें अपने घरों से ही शुरुआत करनी होगी, तभी लिंग–भेद भाव को समाप्त किया जा सकता है। इन असमानताओं को दूर करके ही एक विकसित एवं प्रगतिशील देश की स्थापना की जा सकती है। हमें अपने देश की स्त्री पर होने वाले अत्याचारों, शोषण और भेदभावों को दूर करने की कामना करनी चाहिए।

चाहत चौहान
बी.ए. (भाग दूसरा)

वर्तमान समय में पंजाब में बढ़ रहा नशों का रुझान

''नशा चाहे जैसा हो करता लाचार और बर्बाद''

वर्तमान समय में नशा भारत सहित पुरे विश्व के लिए एक प्राथमिक समस्या में से एक है। नशे का बढ़ता प्रभाव प्रमुख रूप से भारत और पंजाब के लिए पिछले दो दशकों से प्रमुख समस्या है। गुरु नानक देव की ज्ञानामृतमयी धरती और पांच नदियों से बने पंजाब के युवाओं की रगों में आज नशे की धारा बह रही है। पंजाब का युवा वर्ग नशाखोरी से आज बुरी तरह से प्रभावित दिखाई दे रहा है।

एक हरित राज्य के युवा सुखे की तरफ दिन–ब–दिन अग्रसर होते नज़र आ रहे हैं। जिसका बुरा प्रभाव समाज व देश को आर्थिक और समाजिक तौर पर कई वर्षों से प्रभावित कर रहा है। नशाखोरी खत्म करने के लिए जन–जन को इस समस्या के प्रति गंभीर होना ही होगा।

पंजाब में नशे के प्रमुख कारण :–

1970 में जब भारत में हरित–क्रांति आयी तब उसका नेतृत्व पंजाब ने गर्व से किया था। हरित–क्रांति ने पंजाब को समृद्ध बना दिया था। परंतु उसके बाद पंजाब के नशे की ओर बढ़ते कदमों ने आज कई राज्यों की तुलना में पिछड़ा हुआ बना दिया।

पंजाब के पिछड़ने के पीछे प्रमुख रूप में स्थानीय लोग ही हैं। फिल्मों के गानों में शराब इत्यादी शब्दों का प्रयोग बड़े गर्व से किया जाता है और इन गानों को गुनगुनाता युवा कब खुद नशे में पड़ जाता है पता नहीं चलता। दुसरा प्रमुख कारण सरकार के द्वारा कोई ठोस नीति न होने के कारण युवा वर्ग नशों की ओर झुकता और प्रभावित होता गया और सरकारें आती रही और बदलती रही। विदेशी ताकतों का प्रभाव आज भी विद्यमान होने से नकारा नहीं जा सकता है। शिक्षा के क्षेत्र में कमी होने के कारण अशिक्षीत वर्ग इसकी चपेट में जल्दी आ जाता है।

भारत व पंजाब से नशे से निवारण के उपाय :–

पंजाब व भारत से नशाखोरी को जड़ से खत्म करने के लिए अभी बहुत संघर्ष करने की जरूरत होगी।इस को खत्म करने के कुछ उपाय निम्नलिखित हैं–

–किसी भी समस्या का प्रभावी ढंग से निपटारा करने के लिए सबसे पहले जन–जन की जागरूक करना होगा।

–अत्यावश्यक है जनता को नशे के बुरे प्रभावों के बारे में जागरूक करके इससे आसानी से निपटा जा सकता है।

–नशे के खिलाफ कैंपेन लगाकर व बड़ी संख्या में नशामुक्ति केन्द्र बनाकर नशे से प्रभावित लोगों का इलाज करके ही नशाखोरी को जड़ से समाप्त किया जा सकता है।

–सरकार द्वारा नशे के खिलाफ एक ठोस रणनीति बनाई जानी चाहिए और इसे अपनी कागज की फाइलों तक सीमित न रखकर प्रभावी रूप से अमल करना चाहिए।

– शिक्षा के क्षेत्र में सुधार करना जरूरी है।

उपसंहार –नशाखोरी भारत में प्रमुख रूप से फैली हुई है। सीमावृती राज्य पंजाब जहाँ हर दिन 186 लोगों की मृत्यु नशे से हो रही है। ऐसे राज्य की सरकार की ठोस कदम उठाकर नशाखोरी को जड़ से उखाडकर पुनः गुरु नानक देव जी की धरती को अंधकार से ज्ञान की ओर अग्रसर करना होगा। पंजाब के जन–जन को यह समझना होगा की नशा–मुक्त पंजाब में ही यहाँ के लोगों और समाज की भलाई है।

करन सुखवाल
बी.एस.सी.(भाग तीसरा)

गज़ल

खुद ही खुद को समझाकर तो देखो,
हथेली पर जान को टिकाकर तो देखो।
तुम कर रहे हो खुद को बेवफा और मुझको बेवफा,
कभी आँखों से आँखे मिलाकर तो देखो।
दूर जा रहे हो ? जाओ, आज़ाद किया तुमको,
उड़ के आऊँगा, थोड़ा घबराकर तो देखो।
दूर बैठे पूछ रहे हो, हाल हमारा ? बताता हूँ ,
अपने दिल पर हाथ लगाकर तो देखो।
क्या समझोगे मुझको, गरूर में रहने वालो,
अपने आप से बाहर कभी आकर तो देखो।

जगसीर
एम.एस.सी. बाइयोटैक (भाग दूसरा)

गज़ल

डरना, भागना और मरना ही उल्फत थोड़ी है,
वफा करके वफा माँगना मोहब्बत थोड़ी है।
क्या हुआ गिर गये अगर आस्माँ पे पहुँचकर,
फिर उठेंगे और उड़ेंगे अभी कयामत थोड़ी है।
वो राख कर गया है अरमान मेरे मानता हूँ ,
उस से भी तो पूछो वोह सलामत थोड़ी है।
मत सोचा कर फायदा इस में हर पल अपना,
यह इश्क है सनम दौलत शौहरत थोड़ी है।

जगसीर
एम.एस.सी. बाइयोटैक (भाग दूसरा)

जिन्दगी क्या है ?

ज़िन्दगी एक दर्द है, इसे सहना सीखो ।
दिल की बात जरूरी है, इसे कहना सीखो।
हर कदम पर धोखा है, संभल कर चलना सीखो
किसी ओर से प्यार करने की बजाए, खुद
से प्यार करना सीखो।
किसी इन्सान से नहीं, भगवान से डरना सीखो।
पीछे मुड़कर मत देखो बल्कि आगे बढ़ना सीखो।
अगर खुद दुःखी हो तो किसी को खुशी देना सीखो।
अगर खुद से गलती हो जाए, तो दूसरे को सीख देना सीखो।
खुद असहाय हो तो किसी को सहारा देना सीखो।
सिर्फ इन्सान से नहीं हर जीव से प्यार करना सीखो।
दुनिया से अपने हक के लिए लड़ना सीखो।
मुश्किलों से भागना नहीं बल्कि डटकर सामना करना सीखो।
जिन्दगी यही है, इसे स्वीकार करना सीखो।

साक्षी गोयल
बी.ए.(भाग तीसरा)

तो बात बने

सुख में तो सभी खुश होकर मिलते है,
दुःख में भी वैसे ही खुशी से
सहारा दें, तो बात बने
ख्यालों में तो हर कोई आता है,
हकीकत में आए तो बात बनें
फूलों पर चलना तो आसान है, कोई
काँटों पर चले तो बात बने
चेहरे तो सभी पढ़ लेते हैं, कोई
दिल पढ़ पाए तो बात बने
साथ चलने का वादा तो सभी
करते हैं, कोई साथ चले तो बात बने
दिल तोड़ना तो सभी जानते है, कोई
टूटे दिल को जोड़े तो बात बने
अपनों को तो सभी अपनाते है,
कोई परायों को अपनाएं
तो बात बने।

साक्षी गोयल
बी.ए.(भाग तीसरा)

कविता क्या है ?

कविता क्या है ?
कविता है विश्व,
कविता ब्रह्माण्ड है।
कविता है परिवेश, कविता समस्त लोक है।
त्रासदियों का आईना है कविता,
कविता भावी सुखों की आहट है।
दर्द का आँसू है कविता,
कविता खुशियों की मुस्कराहट है
एक सुनहरा सपना है कविता,
कविता वास्तविकता की परछाई है।
शोषित समाज की चीख है कविता
कविता ईमानदारी की अच्छाई है
भूखे की रोटी है कविता, कविता बेघर का घर है
भटके राही की राह है कविता,
कविता प्यासे का जलाशप है।
विस्तृत सी धरा है कविता,
कविता शब्दों का आकाश है।
सलाखों की आज़ादी है कविता,
कविता जीवन का उल्लास है।
उड़ते पक्षी का पंख है कविता,
कविता दौड़ते मृग की कस्तूरी है।
शांत निंद्रा का आनंद है कविता,
कविता जीने की मजबूरी है।
और क्या लिखूं कि क्या है कविता ?
सब कुछ है, और कुछ नहीं है कविता।

साक्षी गोयल
बी.ए.(भाग तीसरा)

सफर, ज़िंदगी का.....

बेखोफ़, आसमां में खिलखिलाती जिंदगी
कुछ अक्षरों से, फलसफे बनाती जिंदगी
पंजो पर उचक कर राह दिखाती जिंदगी
चुनौतियों को हँस कर मुंह चिढ़ाती ज़िंदगी
हर मुश्किल को धुल में उड़ाती जिंदगी
जीत कर फिर आगे बढ़ जाती जिंदगी
किसी मोड़ पर नए रिश्ते बनती जिंदगी
नया साथ, नए सपने सजाती जिंदगी
आशाओं के फूल कुछ खिलाती जिंदगी
अपनों के साथ मुसकुराती जिंदगी
ज़िंदगी को ज़िंदगी बनाती ज़िंदगी
मंज़िल नहीं, राहे कहलाती ज़िंदगी

ऋषभ कुमार
बी.ए. (भाग तीसरा)

इंसानियत नहीं है फिर भी इंसान हूँ

ये ज़माना बड़ा अजीब है,
ये यूँ तो अमीर है पर दिल का बड़ा गरीब है,
न जाने कितने धोखे कितने फरेब करता है,
सिर्फ कुछ रुपयों के लिए किसी को मारता या खुद मरता है।
जिसको माथे पर बिठाता है उसी को पैरों की धूल बनाता है,
इंसानियत ज़रा सी भी नहीं है पर फिर भी इंसान कहलाता है,
देवी कह कर पूजता है जिसको
उसी को बोझ समझ कर अपने हाथों से दफनाता है।
जिसको घर की लक्ष्मी बनाता है,
उसी को दहेज के लिए ज़िंदा जलाता है,
इंसानियत ज़रा सी भी नहीं है पर फिर भी इंसान कहलाता है।
यूँ तो कहने को हक दोनों को बराबर का देता है,
मगर दर्जा क्यों फिर उसको पराये धन का देता है,
जिसके हाथों से रक्षा और विश्वास का धागा बँधवाता है,
उसी को इज्जत के नाम पर मरवाता है,
इंसानियत नहीं है बिल्कुल भी फिर भी इंसान कहलाता है।
जिस माँ के बिना एक पल कभी न रहता था,
उसी से अब सालों अलग रहता है,
जिस औरत को अर्द्धांगिनी कह कर अपने साथ लाया था,
उसी को दहेज के लिए पल पल तड़पाता है,
इंसानियत नहीं है पर इंसान खुद को कहलाता है।

रोहित कुमार
बी.एस.सी.(भाग दूसरा)